पुंछ और राजौरी के प्रसिद्ध तीर्थस्थान

पुंछ और राजौरी जम्मू के दो ज़िले हैं। इन दोनों ज़िलों में अनेक तीर्थस्थल हैं, जिनमें नंगाली साहिब, बुड्ढा अमरनाथ, शाहदरा शरीफ, ज़ियारत पीर छोटे–शाह, रामकुंड मंदिर, मंदिर बनखंडी महादेव आदि उल्लेखनीय हैं।

पुंछ जम्मू से 245 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह सीमावर्ती क्षेत्र प्राकृतिक सौंदर्य के लिए आकर्षण का केन्द्र है। इसे छोटा–कश्मीर भी कहते हैं। विभिन्न धर्मों और सम्प्रदायों के लोग यहाँ एक साथ मिलकर रहते हैं। पुंछ नगर में अत्याधिक मंदिर, गुरुद्वारे, मस्जिदें आदि होने के कारण इसे देवभूमि कह सकते हैं। यहाँ के ऊँचे पर्वतीय शिखर, घने वन, निर्मल जल के स्त्रोत, कल–कल करती नदियाँ और चौड़े मैदान मन को मोह लेते हैं।

पुंछ में देवी–देवताओं और पीरों–संतों के स्थल कहीं तो गुफाओं में हैं, तो कहीं पर्वत शिखरों पर। भिन्न–भिन्न संप्रदायों के लोग इन तीर्थ सिलों में श्रद्धापूर्वक जाते हैं।

पुंछ नगर से पाँच किलोमीटर की दूरी पर गुरुद्वारा नंगाली–साहिब स्थित है। यह संतपुरा नंगाली साहिब के नाम से भी जाना जाता है। इस गुरुद्वारे की सीापना लगभग दो सौ वर्ष हुए संत भाई मेला सिंह जी ने की थी। वे बड़े दार्शनिक और परोपकारी संत थे। वे संतभाई रोचा सिंह जी के शिष्य थे जिनको दसवें गुरु गोविन्द सिंह जी ने सिक्ख–पंथ का प्रचार करने के लिए पुंछ और कश्मीर भेजा था। जब गुरुद्वारे का निर्माण हुआ तो वहां जंगल ही जंगल थे। यह भव्य गुरुद्वारा द्रंगुली नाले के तट पर स्थित है।

संत भाई मेला सिंह जी स्वयं एक गुफा में रहते थे। यह गुफा आज भी सुरक्षित

है। संतभाई मेला सिंह जी का आरंभ किया हुआ 'गुरु का लंगर' आज भी निरंतर चल रहा है।

गुरुद्वारा नंगाली साहिब मुख्यतः तीन भागों में फेला हुआ है। इसके एक भाग में संतों–महंतों की देहरियाँ बनी हुई हैं। लंगर के एक ओर 'मोदीखाना' है, जो गुरुद्वारे का भंडारघर है। भंडार का लेखा–जोखा रखने वाले को मोदी कहा जाता है। गुरुद्वारे के तीसरे भागे में एक दीवानघर और कुछ कमरे बने हुए हैं। दीवानघर में श्री गुरुग्रंथ साहिब जी का पाठ तथा शब्द–कीर्तन होता है।

गुरुद्वारा नंगाली साहिब का बड़ा ऐतिहासिक तथा धार्मिक महत्त्व है। सन् 1828 में जम्मू के महाराजा गुलाब सिंह जी यहाँ पधारे और श्रद्धावश उन्होंने पुंछ के पाँच तथा कश्मीर के तीन गाँव इस गुरुद्वारे के नाम लिख दिए।

वैशाखी के मेले पर यहाँ खूब चहल–पहल होती है। दूर–दूर से हर धर्म और सम्प्रदाय के लोग यहाँ आते हैं और श्रद्धा–सुमन भेंट करते हैं। यहाँ पर यात्रियों के रहन–सहन तथा लंगर का सुप्रबन्ध है।

पुंछ से ही लगभग बाईस किलोमीटर की दूरी पर बुड्ढा अमरनाथ जी का देवस्थल मंडी (राजपुरा) की रमणीय घाटी में स्थित है। यह स्थल एक ऊँची पहाड़ी के आँचल में है। इस देवस्थल के पास लोरन नाला बहता है, जिसका कल–कल बहता स्वच्छ पानी पूरी घाटी के शांत वातावरण को गुंजा देता है। चारों और घने जंगल हैं। शीतकाल में यह घाटी बर्फ की चादर से ढक जाती है जिससे पूरा दृश्य और भी मनमोहक हो उठता है।

बुड्ढा अमरनाथ जी का मंदिर एक सुंदर चकमक शिला से बना हुआ है। इसके भीतर उसी शिला का एक खंड भगवान शंकर के रूप में पूजा जाता है। मंदिर में शिव पार्वती और गणेश जी की मूर्तियाँ भी स्थापित की गई हैं। शिव जी पर चढ़ाया जाने वाला जल प्रणाली से बहकर मंदिर में ही कहीं समा जाता है।

बुड्ढा अमरनाथ जी से एक रोचक पौराणिक कथा जुड़ी हुई है। कहते हैं कि एक बार पुंछ की महारानी चंद्रिका, बुढ़ापे के कारण कश्मीर घाटी में स्थित स्वामी अमरनाथ जी की यात्रा पर नहीं जा सकती क्योंकि इसका रास्ता अति दुर्गम है। वे बहुत दुखी हुई। उन्होंने भगवान् शंकर की तपस्या की, जिस पर भगवान ने उन्हें स्वप्न में कहा कि मैं आपको लोरन नाले के किनारे दर्शन दूँगा। आखिर श्रावण–पूर्णिमा के दिन शंकर प्रकट हुए। बूढ़ी महारानी को भगवान् शंकर वृद्ध रूप में दिखाई दिए। तब से यह तीर्थस्थल बुड्ढा अमरनाथ कहा जाने लगा।

बुड्ढा अमरनाथ में श्रावण–पूर्णिमा को एक बड़ा मेला लगता है जिसमें न केवल पुंछ से बल्कि देश के कोने–कोने से हज़ारों श्रद्धालु जन सम्मिलित होते हैं। दशनामी अखाड़ा से बुड्ढा अमरनाथ जी की पवित्र छड़ी की शोभा–यात्रा निकलती है। इस शोभा–यात्रा में अखाड़ें के स्वामी जी महाराज एक सुसज्जित पालकी में विराजमान होते हैं। साधु–संतों की मंडिलयाँ झंडे फहराती हुई तथा तुरही बजाती हुई साथ–साथ चलती हैं। श्रद्धालु जगह–जगह पवित्र छड़ी तथा शोभायात्रा में सम्मिलित स्वामी जी महाराज का स्वागत करते हैं। यात्रियों तथा श्रद्धालुओं की भीड़ जुटती है। इस प्रकार बुड्ढा अमरनाथ के मेले में एकता, भाईचारे तथा रंगबिरंगी भारतीय संस्कृति की एक सुन्द झलक मिलती है।

बुड्ढा अमरनाथ में यात्रियों के रहने के लिए एक सुन्दर भवन का निर्माण हुआ है तथा भोजन आदि और चिकित्सा का भी सुन्दर प्रबंध है। कश्मीर घाटी में स्थित अमरनाथ की यात्रा से पूर्व बुड्ढा अमरनाथ की यात्रा अनिवार्य मानी जाती है।

ज़िला पुंछ के पास ही ज़िला राजौरी है। राजौरी नगर से लगभग पैंतीस किलोमीटर की दूरी पर 'शाहदरा शरीफ' नामक एक प्रसिद्ध 'जियारत' है। 'शाहदरा शरीफ' में महान् सूफी पीर 'गुलाम शाह' का मकबरा है। गुलाम शाह साहिब का जन्म रावलपिंडी के एक गाँव के एक सैय्यद परिवार में हुआ था। किशोरावस्था में ही वे घर

त्याग कर ईश्वर की खोज में निकल पड़े थे। घूमते–घूमते पुंछ आए। जीवन के अंतिम वर्ष उन्होंने 'शाहदरा शरीफ' में बिताए। यहाँ उन्होंने चालीस दिन इबादत की। इस इबादत को 'चिल्ला' कहते हैं। चिल्ला काट कर जब वे बाहर आए तो श्रद्धालुओं ने जगह साफ की तथा इस ज़ियारत का निर्माण करवाया। पीर साहिब का खड़ाऊँ, हथौड़ा आसन और कटोरा आज तक भी सुरक्षित हैं। भक्त इनके दर्शन करके स्वयं को धन्य मानते हैं। विभिन्न धर्मों के लोग साल भर यहाँ आकर मन्नतें मानते हैं। कहते हैं कि एक बार महाराजा गुलाब सिंह जी साधारण वेश में यहाँ आए। उन्होंने पीर साहिब की बड़ी सेवा की और उनसे आशीर्वाद प्राप्त किया। राजा ने ज़ियारत के नाम बहुत सी ज़मीन लिख दी। वह सारी ज़मीन इस 'ज़ियारत' की सम्पत्ति है। 'जियारत' से होने वाली आय से कई संस्थाएँ चलती हैं तथा जनहित के कई कार्य किए जाते हैं।

'शाहदरा शरीफ' के आँगन में संतरे का एक पेड़ है जिस पर बारह महीने फल लगते हैं। विश्वास किया जाता है कि इस पेड़ के नीचे बैठे किसी भी व्यक्ति की संतान–कामना पूरी हो जाती है यदि कोई फल स्वयं ही उसके लिए आ गिरे।

इस ज़ियारत के प्रति लोगों की अत्यधिक आस्था है। यहाँ भक्त–जन श्रद्धा के सुमन तथा बहुमूल्य चढ़ावे चढ़ाते हैं। जम्मू के पुंछ और राजौरी ज़िलों के तीन प्रमुख तीर्थों के वर्णन से स्पष्ट होता है कि जम्मू प्रांत के लोगों के मन में सब धर्मों के प्रति समान श्रद्धा है।

– 'विभागीय'

प्रश्न–अभ्यास

बोध और विचार

1. जम्मू से पुंछ कितनी दूरी पर स्थित है ?
2. पुंछ के किन्हीं तीन देवस्थलों के नाम लिखें।
3. नंगाली–साहिब गुरुद्वारे की स्थापना किसने की थी ?
4. 'शाहदरा शरीफ' की ज़ियारत किसके नाम से प्रसिद्ध है ?
5. 'शाहदरा शरीफ' के बारे में पाँच वाक्य लिखें।
6. बुड्ढा अमरनाथ जाने वाली 'छड़ी–यात्रा' का वर्णन करें।
7. 'चिल्ला' से क्या तात्पर्य है ?
8. बुड्ढा अमरनाथ संबधित पौराणिक कथा लिखें।

भाषा–अध्ययन

1. नीचे दिए गए मूल शब्दों से तीन–तीन शब्द बनाएँ।

   शोभा, काल, स्वच्छ, धर्म, खंड।

   जैसे :– तप–तपस्या, आतप, तपस्वी।

2. 'प्र' उपसर्ग से बने तीन शब्द बनाएँ।
3. नीचे दिए गए अनेक शब्दों के लिए एक–एक शब्द लिखें :

   1. चालीस दिन की इबादत।
   2. जिसकी संतान न हो।
   3. जो मन को मोह ले।
   4. जहाँ पहुँचना कठिन हो।

4. नीचे बायीं ओर कुछ विशेषण दिए गए हैं और दायीं ओर उनके विशेष्य। किंतु ये

दोनों आमने–सामने न होकर ऊपर–नीचे हैं। प्रत्येक विशेषण के साथ उपयुक्त विशेष्य रिक्त सीान पर लिखे :–

जैसे :–	प्राकृतिक	संत	सौंदर्य
	1. धार्मिक	क्षेत्र	.....
	2. स्वच्छ	स्थल	.....
	3. सीमावर्ती	जल	.....
	4. घने	सौंदर्य	.....
	5. दार्शनिक	वन	.....

योग्यता विस्तार

अपने नगर (शहर) के किसी एक प्रसिद्ध देवस्थल पर जाकर वहाँ के इतिहास के बारे में जानकारी प्राप्त करें।